U.G.C. Serial No. 02, Journal No. 49335

ISSN - 0974-1526

SAṀSKṚTI SANDHĀNA

Volume - XXX No. 1 (January-June) 2017

REFERRED JOURNAL

Editor

Dr. Jhinkoo Yadav

JOURNAL OF THE RES...
INSTITUTE OF HUMAN CULTUR...

Scanned with CamScanner

विषयानुक्रमणिका
Content

			पृष्ठ सं०
	सम्पादकीय		i-ii
१.	वैदिक संस्कृति में भारतीय कला एवं सौन्दर्य बोध	सरस्वती सिंह	१-७
२.	ऋग्वेद में नारी का सौन्दर्य चित्रण	महेन्द्र नाथ सिंह	८-१५
३.	वाल्मीकि रामायण में निहित सौंदर्य बोध	राजनाथ यादव	१६-२२
४.	प्राचीन भारत में ग्रीवा आभूषण	अनिल कुमार सिंह	२३-२९
५.	सौन्दर्यशास्त्र और सौन्दर्यानुभूति के प्रमुख तथ्य	एस०एन० उपाध्याय	३०-३४
६.	तालमान: आनुपातिक सौन्दर्य का वैज्ञानिक मापदण्ड (सारनाथ पाषाण मूर्तिकला के विशेष सन्दर्भ में)	अर्चना शर्मा	३५-४१
७.	भारतीय चित्रण परम्परा में मानवीय रूपों का सौन्दर्यात्मक अवलोकन	एम०एस० मावड़ी	४२-४५
८.	भारतीय संस्कृति में नारी का सौन्दर्य बोध	प्रणवेश्वर नाथ राय	४६-५२
९.	भारतीय साहित्य में सौन्दर्य एवं चित्रकला	योग्यता रानी	५३-५८
१०.	कुषाण प्रस्तर कला में सौन्दर्य बोध	आलोक कुमार यादव	५९-६४
११.	जैन गुहा एवं चित्रकला में सौन्दर्य बोध	विजयकान्त यादव	६५-६९
१२.	मेघदूत में वर्णित सौन्दर्यात्मक तत्त्व	शैला यादव	७०-७७
१३.	महाकवि कालिदास के नाटकों में ललितकला	रश्मि सिंह	७८-८५
१४.	भरहुत मूर्ति शिल्प: सौन्दर्य का अद्भुत सन्निवेश	शरदेन्दु कुमार त्रिपाठी	८६-९१
१५.	गुप्तकालीन कला में सौन्दर्य बोध	प्रज्ञा पाण्डेय	९२-९८
१६.	दुर्गा का प्रतिमा शास्त्रीय विवेचन	शैलेन्द्र कुमार मिश्र	९९-१०२
१७.	बुन्देलखण्ड में स्थित गैराहा के शिवमंदिर में उत्कीर्ण मूर्तिशिल्प में सौन्दर्य बोध	पार्थी	१०३-१०६
१८.	संस्कृति और संगीत : एक दृष्टि	शिवि तिवारी	१०७-१११
१९.	कला, संस्कृति और प्राकृत	रजनीश शुक्ल	११२-११४
२०.	दण्डी और स्त्री-सौन्दर्य बोध	संजय कुमार	११५-१२३
२१.	प्राचीन भारतीय साहित्य में सौन्दर्य बोध: केश प्रसाधन के सन्दर्भ में	विश्वनाथ वर्मा	१२४-१२८

Scanned with CamScanner

दण्डी और स्त्री-सौन्दर्यबोध

संजय कुमार*

सुन्दरस्य भावः सौन्दर्यम् अर्थात् सुन्दर भाव को सौन्दर्य कहते हैं। सुन्दर शब्द की व्युत्पत्ति-सुष्ठ उनत्ति आर्द्रीं करोति इति सुन्दरम् से हुई है। सु+उन्दी क्लेदने धातु से अर् प्रत्यय से सुन्दर शब्द निपातनात सिद्ध होता है।[1] कहने का भाव यह है कि सुन्दर वह वस्तु है जो चित्त को आर्द्र कर देती है। द्रष्टा अथवा अनुभवकर्त्ता सांसारिक भवबाधाओं से घिरा हुआ ज्यों ही किसी सुन्दर वस्तु को देखता है त्यों ही उसके चित्त में मृदुलता, कोमलता एवं सरसता का संचार होने लगता है। यह रिगलित वेद्यान्तर के समान है जिसके कारण कमनीय कोमलांगी अंगना के दर्शन मात्र से द्रष्टा भावविभोर हो उठता है। कमनीयता के दर्शन से द्रष्टा के चित्त में मृदुतया दर्शनीय वस्तुओं के सौन्दर्य का दर्शन हुआ करता है। दुष्यन्त शकुन्तला को देखते ही अकस्मात कह उठता है-अहो मधुरमासांदर्शनम्।[2] अर्थात् इनका स्वरूप कितना मनोहर है। पुनः वह तृतीय अंक में शकुन्तला को शाखाओं की ओट से देखते हुए कहता है-अयं लब्धंनेत्र निर्वाणम्।[3] अर्थात् अहा! नेत्रों को परमानन्द प्राप्त हो गया। नेत्र का व्यापार है दर्शन। राजा दुष्यन्त के नेत्रों को शकुन्तला के दर्शन के कारण मोक्ष मिल गया है। वसुधातल की अप्रतिम सौन्दर्य की मूर्ति के दर्शन का फल है नेत्र मोक्ष जिसे दुष्यन्त का नेत्र प्राप्त कर लिया है। इन्द्रिय मोक्ष और आत्म मोक्ष में अंतर है। आत्मा के मोक्ष का तात्पर्य है शरीरबन्धन से मुक्त होना और इन्द्रिय मोक्ष का प्रयोग इन्द्रिय के अतिशय व्यापार के विषय के लिए किया जाता है। यही व्यापार सुन्दरस्य भावः सौन्दर्यम् के रूप में प्रतिपादित किया जाता है। आचार्य वामन इसी उद्देश्य से 'सौन्दर्यम् अलंकारम्'[4] की बात करते हैं। पण्डितराज जगन्नाथ 'रमणीयार्थ प्रतिपादकः शब्दः काव्यम्।'[5] और आचार्य दण्डी 'शरीरं तावदिष्टार्थ व्यवछिन्ना पदावली'[6] को चरितार्थ करते हैं। उन सभी के मूल में सौंदर्य है। यह सौन्दर्य लोक में होते हुए भी लोकोत्तरता को जन्म देता है। इसीलिए सत्यं शिवं सुन्दरम् के रूप में यह विभूषित हुआ है।

स्त्री-सौंदर्य का विमर्श हमारे साहित्यकारों के द्वारा प्राचीन समय से होता चला आ रहा है। यद्यपि उनके अधिकार और स्वातन्त्र्य का विमर्श आज अत्यधिक रूप से देखने को मिल रहा है। परन्तु यह विमर्श स्त्री के वैभव को कहीं न कहीं कमतर करके ही देख रहा है। रामायण और महाभारत के स्त्री-सम्बन्ध में दुर्बल पक्ष को ही उद्घाटित करने का प्रयास किया जाता है। उनके प्रतिकार को महत्त्व नहीं दिया जाता है। आज आवश्यकता उनके प्रतिकार को उद्घाटित करने की है। उनका प्रतिकार रूप उज्ज्वलता ही समाज को एक दिशा देती है। उसे ही पर्दे के पीछे रखना

* सहायक आचार्य, संस्कृत विभाग, डॉ० हरिसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर (म०प्र०)

Scanned with CamScanner